RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.168-172

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

प्राचीन भारतीय विचार और सतत विकास लक्ष्य

*डॉ दिनकर त्रिपाठी, शोध निर्देशक

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, फ़ीरोज़ गांधी कॉलेज, रायबरेली , लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

**कैलाश कुमार गुप्ता, शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ।

सारांश:

प्राचीन भारतीय विचार सुनने में प्राचीन लगता है और वहीं सतत विकास लक्ष्य (SDG) एक आधुनिक अवधारणा के रूप में दिखाई देती है। तो यह प्रश्न उत्पन्न हो जाता है कि दोनों में मेल कैसे स्थापित हो सकता है। क्या प्राचीन भारतीय विचारों मे भी सतत विकास लक्ष्य की अवधारणा को अपनाया गया था? प्राचीन भारतीय विचारों के अंतर्गत मनु का धर्मशास्त्र, चाणक्य का अर्थशास्त्र और गौतम बुद्ध इत्यादि के विचार पाए जाते हैं, जिसमे सभी के विचारों का मूल बिंदु न्याय व शांति(SDG 16), करुणा एवं ज्ञान (SDG 4), प्रकृति का संरक्षण (SDG 6 व 12) और समानता (SDG 5 एवं 10) जैसे मानवतावादी और सतत विकास मूल्य हैं।

प्राचीन भारतीय विचारों में प्रारंभ से ही मानवतावादी मूल्यों को अपनाया गया था, जिसमे भौतिकतावाद, पर्यावरणीय दोहन और उपभोक्तावाद के स्थान पर प्रकृति को पूजनीय और पर्यावरणीय संरक्षण के रूप में देखा जाता था। यहां प्रकृति और मनुष्य को आपस में जोड़कर देखा जाता था ताकि प्रकृति और मनुष्य दोनों का विकास साथ - साथ सतत रूप में होता रहे। जिसमें वर्तमान पीढ़ी के साथ - साथ भविष्य की पीढ़ियों के हितों को भी ध्यान में रखा जाता है। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण "गरुण पुराण " के इस श्लोक में दिखाई देता है , जिसमें कहा गया है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्" जिसका अर्थ है सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का कल्याण हो और कोई भी दुखी न हो।[1] क्या यह श्लोक सतत विकास लक्ष्य को समाहित नहीं कर रहा है? इस प्रकार प्राचीन भारतीय विचार मानवतावादी और पर्यावरणीय जैसे मूल्यों को आधुनिक मूल्यों की तरह प्राचीन काल से ही अपनाता आ रहा है।

प्राचीन भारतीय विचारों में सतत विकास लक्ष्य की अवधारणा को प्राचीन समय से ही उसे समझा और अपनाया गया था। यही नहीं, बल्कि उसे मानव जीवन के व्यवहार में भी उसे लागू किया जाता था, जो आज भी कई रूपों में दिखाई देती है। जैसे नीम और पीपल इत्यादि के रूप में प्रकृति और वृक्षों की पूजा करना, जिससे आज भी लोग नीम और पीपल जैसे वृक्षों को काटने से कतराते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक रूपों में भी सतत विकास लक्ष्य को महत्व दिया जाता था।

Article Publication

Published Online -November 2025

Corresponding Author

डॉ दिनकर त्रिपाठी, शोध निर्देशक

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, फ़ीरोज़ गांधी कॉलेज, रायबरेली , लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

Email- saurabhjncu@gmail.com

© 2025 - published by Vidhina

This is an open access article

प्राचीन भारतीय विचार सतत विकास लक्ष्य को किस प्रकार अपने मूल्यों में समाहित करती है, यह जानने से पहले एक बार सतत विकास लक्ष्य की अवधारणा को समझना आवश्यक हो जाता है। 21 वीं सदी तक आते आते औद्योगिकरण, पूंजीवाद और उपभोक्तवाद के नकारात्मक प्रभाव जलवायु परिवर्तन के रूप में दिखाई देने लगे और इसके अलावा राजनीतिक रूप में लोकतंत्र और मानवाधिकार के इस युग में न्याय, लैंगिक समानता, भुखमरी एवं गरीबी जैसी

[1] गरुण पुराण , अध्याय 35, श्लोक 51

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.168-172

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

समस्या बढ़ती जा रही थीं। इस समस्याओं के समाधान के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2015 में 17 सतत विकास लक्ष्य (SDG) की अवधारणा को अपनाया गया, जिसे एजेंडा - 2030 कहा गया।

सतत विकास लक्ष्य एक ऐसी अवधारणा है जो यह कहती है कि प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार दोहन किया जाए जिससे वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करते हुए उसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी संरक्षित किया जा सके। अर्थात ऐसा विकास हो जिससे वर्तमान और भविष्य दोनों की आवश्यकता पूरी हो। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इसके लिए 17 सतत विकास लक्ष्य को अपनाया गया जो इस प्रकार है-

1- गरीबी उन्मूलन 2- भुखमरी उन्मूलन 3- अच्छा स्वास्थ्य एवं जीवन
4- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 5- लैंगिक समानता 6- स्वच्छ जल एवं स्वच्छता

7-सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा 8- आर्थिक विकास एवं रोजगार 9- उद्योग, नवाचार एवं बुनियादी ढांचा

10- असमानता में कमी 11- स्थाई शहर एवं समुदाय 12- जिम्मेदार उत्पादन एवं खपत 13- जलवायु करवाई 14- समुद्री जीवन 15- स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र

16- न्याय, शांति एवं मजबूत संस्थाएं 17 - वैश्विक साझेदारी[2]

इसी प्रकार नीति आयोग ने भी सतत विकास लक्ष्य की अवधारणा को स्वीकार किया हुआ है और उसके लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आयोग ने एसडीजी इंडिया इंडेक्स विकसित किया है, जो विभिन्न एसडीजी संकेतकों पर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की प्रगति को ट्रैक करता है। जैसे एसडीजी इंडिया इंडेक्स, जिला एसडीजी सूचकांक, और और सतत विकास लक्ष्य स्थानीयकरण इत्यादि।[3] सतत विकास लक्ष्य की संकल्पना को समझने के बाद अब प्राचीन भारतीय विचारों में एसडीजी की अवधारणा को समझना आसान है। इस संदर्भ में मनु का धर्मशास्त्र एक महत्वपूर्ण विचार के रूप में देखा जाता है। मनु के विचार प्राचीन भारतीय दर्शन और संस्कृति पर आधारित हैं, जबकि एसडीजी संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित वैश्विक लक्ष्य है। मनु के विचारों में शिक्षा, मजबूत शासन व्यवस्था , प्रकृति संरक्षण, मजबूत अर्थव्यवस्था , और लैंगिक समानता जैसे मूल्य एसडीजी की भांति प्राचीन काल से ही दिखाई देती है।

मनु का धर्मशास्त्र प्रकृति और मनुष्यों में धर्म की स्थापना अर्थात संतुलन और सामंजस्य की स्थापना से संबंधित है। एवं मनुष्यों के आचरण को नियंत्रित करने के लिए राजशास्त्र का निर्माण किया। मनु का संतुलन और सामंजस्य का विचार सतत विकास लक्ष्य में भी दिखाई देता है। इसी प्रकार मनु ने अपने राजनीतिक और प्रशासनिक विचारों के अंतर्गत एक मजबूत और कल्याणकारी शासन व्यवस्था की की बात करते हैं। जो गुड गवर्नेंस की अवधारणा से संचालित होती है। मनु के अनुसार राजा स्वयं धर्म के अधीन है और वह प्रजा के हित के लिए कार्य करेगा।[4] जिससे समाज में न्याय और शांति (SDG 16) व्यवस्था बनी रहे। इस प्रकार प्राचीन भारतीय विचारों में प्रारंभ से ही गुड गवर्नेंस और सतत विकास लक्ष्य की अवधारणा देखी जाती है। मनु के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य आत्म-ज्ञान, आत्म-विकास और समाज के कल्याण के लिए काम करना है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का पालन करना शामिल है। मनु के विचार में, मानव को अपने जीवन को संतुलित और समृद्ध बनाने के लिए प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहना चाहिए।

यही नहीं,मनु के विचारों में लैंगिक समानता प्राचीन काल से ही दिखाई देती है। मनुस्मृति के अनुसार "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥"

अर्थात जिस स्थान पर स्त्रियों की पूजा की जाती है और उनका सत्कार किया जाता है, उस स्थान पर देवता सदा निवास करते हैं और प्रसन्न रहते हैं जहाँ ऐसा नहीं होता है, वहाँ सभी धर्म और कर्म निष्फल होते हैं।[5] इस प्रकार मनु के महिला संबंधी SDG 5 से पूरी तरह मेल खाते हैं। कुछ मुख्य बिंदु जो मनु के विचार और एसडीजी को जोड़ते हैं:

[2] द यूनाइटेड नेशन्स सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स , संयुक्त राष्ट्र संघ,पेज 1

[3] एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2023- 24, नीति आयोग,पेज 3

[4] मनुस्मृति, अध्याय 7, श्लोक 1

[5] मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक 56 ,

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.168-172

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

1. प्रकृति के साथ सामंजस्य-

मनु के विचार में, मानव को प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहना चाहिए, उनके अनुसार प्रकृति का अति दोहन करने के स्थान पर उसे सतत रूप में उपयोग करना चाहिए। साथ ही पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना चाहिए। मनु का यह विचार एसडीजी 13 (जलवायु करवाई) और एसडीजी 15(स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र) से मेल खाते हैं। यही नहीं, वे नदियों के संरक्षण की भी बात करते हैं, जिससे जल का समुचित उपयोग हो सके।

2. गरीबी उन्मूलन-

मनु के विचार में राजा को प्रजा के हित लिए कार्य कल्याणकारी कार्य करना चाहिए, जिससे समाज में गरीबी उन्मूलन और सभी का कल्याण हो सके। मनु के अनुसार प्रजा का हित ही राजा का हित होना चाहिए। साथ ही राजा को चाहिए कि वह प्रजा के दुखों के के निवारण के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। मनु का यह विचार एसडीजी 1 (गरीबी उन्मूलन) को आत्मसात करता है।

3. लैंगिक समानता-

मनु के विचार में, लैंगिक समानता एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में देखी जाती है। वह मनुस्मृति में लिखते हैं कि स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ कभी दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। उनके अनुसार जहां पर स्त्रियों का सम्मान किया जाता है, वहां पर देवता भी निवास करते हैं। मनु का नारी समानता संबंधी विचार SDG 5 (लैंगिक समानता) को पूरी तरह समाहित करता है।

4. शिक्षा-

मनु के अनुसार, शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है, जबकि एसडीजी में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक प्रमुख लक्ष्य है। (SDG 4)

5. श्रम और कर्मनिष्ठा –

मनु के अनुसार व्यक्ति को अपने कर्म के द्वारा ही सिद्धि प्राप्त होती है । उनके अनुसार कर्म समाज के कल्याण (लोकसंग्रह) के लिए होना चाहिए , न कि केवल अपने स्वार्थ के लिए। उनके यह विचार SDG 8 (आर्थिक विकास और रोजगार) से मेल खाते हैं।

उपरोक्त बिंदुओं को देखने से पता चलता है कि मनु के विचार प्राचीन होते हुए भी नवीन है। क्योंकि उनके विचार मानवीय समस्याओं के समाधान के लिए प्रासंगिक है। उनके विचार और सतत विकास लक्ष्य (SDG) दोनों कई दृष्टिकोण से मेल खाते हैं। प्राचीन भारतीय विचारों के अंतर्गत चाणक्य का अर्थशास्त्र में भी सतत विकास लक्ष्य की अवधारणा देखी जाती है।चाणक्य की नीतियां न केवल राजनीति और शासन से संबंधित नहीं हैं , बल्कि मानव जीवन , नैतिकता, समाज के संतुलन , संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और नैतिक आचरण पर आधारित है। चाणक्य के विचारों में सामाजिक न्याय (SDG 1एवं 10), शिक्षा (SDG 4), आर्थिक नीति (SDG 8), पर्यावरण संरक्षण (SDG 13 व 15), न्याय , शांति और सुशासन (SDG 16) इत्यादि के विचार प्राचीन काल से ही दिखाई देते हैं। चाणक्य के विचार और एसडीजी (सतत विकास लक्ष्यों) के बीच कई समानताएं हैं। चाणक्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में कई ऐसे विचार प्रस्तुत किए हैं जो एसडीजी के लक्ष्यों से मेल खाते हैं।

चाणक्य के विचार और एसडीजी के लक्ष्य -

1.आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन:

चाणक्य ने अर्थशास्त्र में आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन के महत्व पर जोर दिया है। चाणक्य के अनुसार धन को सही तरीके से उपयोग करना चाहिए ताकि राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत और कल्याणकारी बना रहे।[6] अर्थशास्त्र के इस विचार को एसडीजी 1 (गरीबी उन्मूलन) और एसडीजी 8 (आर्थिक विकास) समाहित करते हैं।चाणक्य की आर्थिक सोच "नैतिक अर्थनीति" की ओर संकेत करती है , जो SDG 8 की आत्मा से पूर्णतः मेल खाती

2. पर्यावरण संरक्षण:

[6] अर्थशास्त्र , अध्याय 4, श्लोक 1

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.168-172

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

चाणक्य के अनुसार मनुष्य को प्रकृति का सम्मान और संरक्षण करना चाहिए। चाणक्य का यह विचार एसडीजी 13 (जलवायु कार्रवाई) और एसडीजी 15 (स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र) के विचार को प्रतिपादित करता है। चाणक्य के अनुसार प्रकृति संरक्षण के द्वारा ही मानवता और विश्व का कल्याण होता है, इसके अभाव में सब कुछ अस्त व्यस्त हो जाता है।[7]

3.अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:

चाणक्य ने अर्थशास्त्र में मंडल सिद्धांत और षड्गुण नीति के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर जोर दिया है। एसडीजी 17 (वैश्विक साझेदारी) इस विचार को प्रतिबिंबित करता है।

4.नैतिकता और नेतृत्व:

चाणक्य के अनुसार एक नेता को अपने कार्यों से लोगों का समर्थन और विश्वास बनाए रखना चाहिए।[8] चाणक्य का यह विचार आधुनिक समय में भी बहुत प्रासंगिक विचार है और यह एसडीजी 16 (शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं) के साथ मेल खाती है।

इन समानताओं से पता चलता है कि चाणक्य के विचार और एसडीजी के लक्ष्य दोनों ही मानवता के कल्याण और विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। चाणक्य के अर्थशास्त्र में जिन विचारों और नीतियों का प्रतिपादन किया गया है, वह भले ही प्राचीन है लेकिन वह आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए आज भी प्रासंगिक बनी हुई है, चाणक्य के विचार सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप है, यह न केवल राजनीतिक और प्रशासनिक समाधान देता है बल्कि इसके साथ - साथ यह शिक्षा, जलवायु परिवर्तन, सतत आर्थिक विकास और समृद्धि इत्यादि के संबंध में भी ठोस एवं बेहतर विचार प्रतिपादित करता है।

प्राचीन भारतीय विचारों के अंतर्गत गौतम बुद्ध के विचारों में भी ऐसी कई संकल्पना और विचार देखे जाते हैं, जो सतत विकास लक्ष्य (SDG) की अवधारणा को अपने भीतर समाहित करते हैं। गौतम बुद्ध ने जीवन के हर पहलू में संतुलन, करुणा और मितव्ययिता का संदेश दिया, ये मूल्य सीधे तौर पर एसडीजी के लक्ष्यों से मेल खाते हैं।गौतम बुद्ध ने धम्मपद और अष्टांगिक मार्ग में जो विचार दिया, वह सतत विकास लक्ष्य की धारणा को आत्मसात करता है।

गौतम बुद्ध के विचार और सतत विकास लक्ष्य -

1.आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन: गौतम बुद्ध ने अपने विचारों में आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन पर जोर दिया है। बौद्ध प्रार्थना में कहा जाता है कि " सब्भा लोकं सुखिनों भवन्तु " अर्थात सभी जीव सुखी हों। यह प्रार्थना एसडीजी 1 एवं 2 (भुखमरी एवं गरीबी उन्मूलन) और एसडीजी 8(आर्थिक विकास और रोजगार) से पूरी तरह मेल खाती है।

2.शिक्षा और स्वास्थ्य: गौतम बुद्ध ने अपने विचारों में शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्व दिया है। बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग में सम्यक ज्ञान पर बल दिया है, जो एसडीजी 4 (शिक्षा) से मेल खाती है। इसी प्रकार वे आष्टांगिक मार्ग में सम्यक भोजन की बात करते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अति भोजन के कारण मोटापा और सुगर जैसी बीमारियां हो रही हैं। बुद्ध धम्मपद में कहते हैं कि "अप्पमादो अमतपदं पमादो मच्चूनो पदं" अर्थात अप्रमाद अमृत का पद है और आलस्य मृत्यु का पद है।[9] यह विचार एसडीजी 3 (अच्छा स्वास्थ्य और जीवन) से मेल खाती है। इसी प्रकार बुद्ध अंगुत्तर निकाय में कहते हैं कि "विधा परमं धनं" अर्थात ज्ञान सबसे बड़ा धन है। यह विचार एसडीजी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) को आत्मसात करती है।

3.सामाजिक न्याय और समानता: गौतम बुद्ध ने सामाजिक न्याय और समानता के महत्व पर बल दिया है। बौद्ध प्रार्थना में कहा जाता है कि " सब्भा लोकं सुखिनों भवन्तु " अर्थात सभी जीव सुखी हो। यह विचार एसडीजी 10 (असमानता घटाना) से मेल खाती है। इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध सामाजिक न्याय के के अंतर्गत जातिवाद और छुआछूत का विरोध करते हुए सभी के साथ समान व्यवहार की बात करते हैं। यही नहीं, वे महिलाओं के प्रति भी समान अवसर और सतत व्यवहार की बात करते हैं।

4.पर्यावरण संरक्षण: गौतम बुद्ध ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर भी बल दिया है। गौतम बुद्ध कहते हैं कि प्रकृति का सम्मान और संरक्षण करना चाहिए। बुद्ध धम्मपद में कहते हैं कि वृक्षों को काटने से पहले सोचना चाहिए[10] और इसी प्रकार वे कहते हैं कि मनुष्य को जल का संरक्षण और सही उपयोग करना

[7] अर्थशास्त्र, अध्याय 8, श्लोक 1

[8] अर्थशास्त्र, अध्याय 2, श्लोक 1

[9] धम्मपद, अध्याय 4, श्लोक 1

[10] धम्मपद, अध्याय 5, श्लोक 5

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.168-172

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

चाहिए।[11]बुद्ध का यह विचार एसडीजी 6 (स्वच्छ जल और स्वच्छता), SDG 13 (जलवायु कस्वाई), SDG 14 (समुद्री जीवन), SDG 15 (स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र) से मेल खाता है।

उपरोक्त बिंदुओं को देखने से पता चलता है कि गौतम बुद्ध के विचार भले ही लगभग 3000 साल पहले दिए गए थे लेकिन वह आज भी प्रासंगिक दिखाई देती है। बुद्ध के विचार, सतत विकास लक्ष्य (SDG) से मेल खाते हैं, उनके विचार भुखमरी और गरीबी, लैंगिक असमानता एवं पूर्वाग्रह,अशिक्षा, मानवाधिकारों का उल्लंघन और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों के समाधान के लिए आज भी रोडमैप का काम करते हैं।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय विचारों का अध्ययन करने से पता चलता है कि वह विस्तृत रूप में सतत विकास लक्ष्य (SDG) से जुड़ा हुआ है। प्राचीन भारतीय विचार और सतत विकास लक्ष्य आपस में अंतर्संबंधित और पूरक के रूप में दिखाई देते हैं। प्राचीन भारतीय विचारों के अंतर्गत वेद, पुराण, उपनिषद और मनु , चाणक्य और गौतम बुद्ध इत्यादि के विचार आते हैं। मनु ने धर्मशास्त्र में जो विचार दिया वह आज भी सतत विकास लक्ष्य (SDG) के रूप में प्रासंगिक दिखाई देती है। मनु के राजनीतिक और प्रशासनिक विचार सुशासन और कल्याणकारी योजनाओं को आत्मसात करते हैं। यही नहीं, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए भी एसडीजी की भांति विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम है। इसी तरह चाणक्य ने भी मानवता और विश्व के लिए जो विचार दिया, वह सतत विकास लक्ष्य को बढ़ावा देने वाला है। चाणक्य नीति और सतत विकास लक्ष्यों के बीच सदियों का अंतर होते हुए भी दोनों का उद्देश्य समान है। चाणक्य ने जो सिद्धांत निर्मित किये वे आज के संयुक्त राष्ट्र संघ के "एजेंडा- 2023" के लिए नैतिक आधार बन सकते हैं। इसी प्रकार गौतम बुद्ध के मूल विचारों में संतुलन , करुणा , अहिंसा , शिक्षा और समानता है , जो एसडीजी से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं। यदि समाज इन मूल्यों को आत्मसात करे तो न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि सामाजिक और वैश्विक स्तर पर सतत विकास हो सकता है।वस्तुतः सभी भारतीय विचारों का केंद्रीय बिंदु सतत विकास लक्ष्य है। भारतीय विचारों में प्रारंभ से ही प्रकृति और मनुष्य को सहयोगी एवं पूरक रूप में देखा जाता रहा है। प्राचीन भारतीय चिंतन में प्रकृति पर विजय करने के स्थान पर उसे पूजनीय और मां के रूप में देखा जाता है।

[11] धम्मपद, अध्याय 5, श्लोक 10